International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(II), January - March, 2024, pp. 101-104

कामायनी का रूपकत्व

संगीता कुमारी*

सार

प्राचीनकाल से ही महाकाव्यों का हमारे साहित्य में विशेष महत्व रहा है। वर्तमान युग में भी हमारे साहित्य निर्माता इस महत्ती कला की ओर से विमुख नहीं हैं। यही इस परम्परा के सांस्कृतिक स्वास्थ्य का एक मुख्य प्रमाण है। महाकाव्य की गाथा एक महान चरित्र के साथ जुड़ी होनी चाहिए। नायक के सामने हमेशा ही एक महान आदर्श व उच्च उद्देश्य होना चाहिए जिससे कि वह मानवता को कल्याण के मार्ग पर अग्रसर कर सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु जयशंकर प्रसाद ने अपने महानतम ग्रंथ कामायनी की रचना की। अपनी रचना में प्रसाद जी ने मानवीय तथा सांस्कृतिक मूल्यों की रचना करते हुए मनुष्यता के उच्च गुणों को सुशोभित किया है। कामायनी एक सफल महाकाव्य के साथ–साथ रूपकत्व की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण कृति है। कामायनी महाकाव्य होते हुए भी उसमें कुछ ऐसे सांकेतिक अर्थ की अभिव्यक्ति कराने वाले प्रतीकात्मक पात्रों एवं घटनाओं के उल्लेख मिलते हैं जिनके आधार पर कामायनी को रूपक काव्य कहा जा सकता है।

शब्दकोशः *रूपकत्व, सांकेतिक, अनुशीलन, अन्नमय, आनंदमय, मनोविज्ञान।*

प्रस्तावना

छायावाद के आधार स्तम्भ जयशंकर प्रसाद का छायावादी काव्यधारा में महत्वपूर्ण स्थान है। वे छायावाद के संस्थापकों और उन्नायकों में से एक हैं। प्रसाद जी की रचनाओं में हमें जीवन का विशाल क्षेत्र समाहित होता हुआ दिखाई देता है। इनकी रचनाओं में प्राचीन भारतीय संस्कृति की गरिमा और भव्यता बड़े ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत की गई है। प्रेम सौन्दर्य, देश प्रेम, रहस्यानुभूति, दर्शन, प्रकृति चित्रण और धर्म आदि विविध विषयों को अभिनव और आकर्षक भंगिमा के साथ अपने काव्य प्रेमियों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। उनकी काव्य रचनाओं की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए नंद दुलारे वाजपेयी ने कहा है – ''प्रसाद जी मनुष्यों के और मानवीय भावनाओं के कवि हैं। शेष प्रकृति यदि उनके लिए चैतन्य है तो भी मनुष्य के सानिध्य में है। वह विकास भूमि यदि संकीर्ण है तो भी मनुष्यता के प्रति तीव्र आकर्षण से भरी हुई है। अपनी रचनाओं में प्रसाद जी ने यह प्रकट कर दिया है कि मानुषीय विरह–मिलन के इंगितों पर वे विराट् प्रकृति को भी साज–सजाकर नाच नचा सकते हैं। यह शेष प्रकृति पर मनुष्य की विजय का शंखनाद है। कवि जयशंकर प्रसाद का प्रकर्ष यहीं पर है।[1]

जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना छायावादी महाकाव्य कामायनी है। प्रतीकात्मक पात्रों एवं घटनाओं के कारण कामायनी रूपक महाकाव्य कहलाता है। कामायनी में रूपक तत्व का विवेचन करते समय हम 'रूपक' को 'एलीगरी' के पर्याय मानकर चलेंगे।

---

* सहायक आचार्य हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, जगतपुरा, जयपुर, राजस्थान।

प्रसाद जी ने इस महाकाव्य का कथा–नियोजन ऐतिहासिक सूत्रों के आधार पर किया है। यद्यपि उन्होंने इतिहास के उपलब्ध तथ्यों को प्रायःमूल रूप में ही स्वीकार किया है, फिर भी उनके मन में सांकेतिक कथा इतनी स्पष्ट रही है कि यह महाकाव्य रूपक–तत्व से अलंकृत हो गया। यह सांकेतिक और मनोविज्ञानपरक कथा इतनी सफलतापूर्वक आयोजित की गई है कि इसे प्रस्तुत कथानक से भिन्न करना असम्भव–सा हो गया है। कथा का यह रूप आलोचकों द्वारा आरोपित नहीं है वरन् कवि को भी अभीष्ट रहता है। कामायनी के आमुख में कवि की स्वीकारोक्ति इसी तथ्य की परिचायक है।

रूपक काव्य के प्राच्य एवं पाश्चात्य आधारों पर 'कामायनी' का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि यहाँ पर भी रूपक काव्य जैसी विशेषताएं विदयमान है। जैसे कामायनी की कथा भी द्वि–अर्थक है क्योंकि एक ओर तो इसमें श्रद्धा और मनु का ऐतिहासिक उपाख्यान है, तो दूसरी ओर मन, बुद्धि और हृदय के क्रमिक विकास का रूप दिखलाते हुए मानवता के विकास का भी निरूपण किया गया है। साथ ही इसके अधिकांश पात्र सांकेतिक हैं, क्योंकि मनु तो स्पष्ट ही मननशील संकल्प–विकल्प युक्त एवं अहंभाव में लीन रहने के कारण अहम्भावयुक्त मन का प्रतीक हैं। श्रद्धा हार्दिक विश्वास एवं आस्तिक्यभाव से परिपूर्ण होने के कारण हृदय की प्रतीक हैं। महोदवी वर्मा ने कामायनी के रूपकत्व पर लिखा है – ''प्रसादजी की कामायनी महाकाव्यों के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ती हैं क्योंकि यह एक ऐसा महाकाव्य है जो ऐतिहासिक धरातल पर प्रतिष्ठित है और सांकेतिक अर्थ में मानव विकास का रूपक भी कहा जा सकता है।''[2]

पात्रों की सांकेतिक स्थिति

'कामायनी' के नायक देव–सृष्टि के एकमात्र अवशिष्ट प्रतिनिधि मनु है। देव सृष्टि के ध्वंसोपरान्त वे हिमालय पर आर्द्र नयनों से विचार मग्न् बैठे हैं। मन का कार्य है – चिंतन करना। मनु भी भूत और भविष्य के विषय में चिंतन कर रहे हैं। देवों के विलास पर आंसू बहाते हुए वे किंकर्तव्यविभूढ़ हो रहे हैं। मन की यही स्थिति संकल्प–विकल्पात्यक स्थिति है, जिसकी चर्चा उपनिषदों में भी हुई है। मन की मूल वृत्ति है – अहंकार जिसके दर्शन मनु की निम्नस्थ पंक्तियों में होते हैं –

''मैं हूँ, यह वरदान सृदश क्यों लगा गूंजने कानों में।
मैं भी कहने लगा 'मैं रहूँ' शाश्वत नभ के गानों में।।[3]

मनोमय कोशस्य जीव अद्योगमन करके प्राणमय और अन्नमय कोशों तक जा सकता है और उर्ध्व संचरण करता हुआ वह विज्ञानमय और आनंदमय कोशों की प्राप्ति कर सकता है। मनु किलात–आकुलि के संसर्ग से आसुरी कर्म करते हुए प्राणमय कोश में जाते हैं, किन्तु श्रद्धा के सम्पर्क से आनंदमय कोश को प्राप्त होते हैं। बद्ध जीव के प्रतीक मनु का अन्नमय कोश से आनंदमय कोश तक पहुँचने का वर्णन ही मनोवैज्ञानिक कथा का मूलाधार है।

'कामायनी' का दूसरा प्रधान पात्र है श्रद्धा, जिसका ऐतिहासिक पक्ष इतना स्पष्ट नहीं है जितना कि सांकेतिक। आचार्य शुक्ल के मतानुसार वह विश्वासमयी रागात्मिका वृत्ति है। वह मनु अर्थात् मन को शक्तिशाली होकर विजयी बनने की प्रेरणा देती है। वह चंचल मन का स्थरीकरण करती है।

''दया, माया, ममता लो आज, मधुरिमा लो अगाध विश्वास
हमारा हृदय रत्न निधि स्वच्छ, तुम्हारे लिए खुला है पास।।''[4]

इड़ा के सांकेतिक अर्थ में तो कोई संदेह ही नहीं है। वह बुद्धि का प्रतीक है। उसका चरित्र–चित्रण ही इस आधार पर किया गया है। अहं की भावना की तुष्टि के लिए मन–बुद्धि क्षेत्र में प्रवेश करता है, जिसका स्वरूप सहज चमत्कार युक्त होता है। इस प्रकार प्रसाद जी ने कामायनी में सांकेतिक अर्थ का निरन्तर निर्वाह किया है। कामायनी में रूपक तत्व का संकेत स्वयं प्रसाद जी ने किया है – यदि श्रद्धा और मनु अर्थात् मनन के सहयोग से मानवता का विकास रूपक है तो भी बड़ा भावमय और श्लाघ्य है। यह मनुष्यता का मनोवैज्ञानिक

इतिहास बनने में समर्थ हो सकता है। कामायनी के अन्य पात्रों में मनु–श्रद्धा का पुत्र मानव नवीन मानवता का प्रतीक है। देवता इन्द्रियों के प्रतीक हैं जो अबाध विलास के कारण सर्वनाश करते हैं। श्रद्धा का पशु निरीह शोषित प्राणी है।

ज्ञान दूर कुछ, क्रिया भिन्न है इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
एक–दूसरे से न मिल सके, यह विडंबना है जीवन की।"[5]

घटनाओं तथा घटना स्थलों की सांकेतिक स्थिति

पात्रों के पश्चात् घटनाओं और घटना–स्थलों की रूपाकात्मक स्थिति की चर्चा अपेक्षित है। कामायनी के प्रारम्भ में जिस जल प्लावन का उल्लेख है वह ऐतिहासिक घटना है। इसकी पुष्टि प्राचीन वैदिक साहित्य और आधुनिक भूगर्भ शास्त्रीय अनुसंधानों से हो जाती है। सांकेतिक अर्थ में जल प्लावन वासनामय अन्नमय कोश है। इड़ा के संकेत पर मनु जिस सारस्वत नगर का पुनरुद्धार करते हैं, वह प्राणमय कोश है। इस प्रदेश की विशेषता भौतिक समृद्धि है जिसे निरन्तर प्राप्त करते रहने पर भी मनुष्य अपूर्ण–काम रहता है। मानसरोवर और कैलाश क्रमशः समरसता की अवस्था और आनंदमय कोश है। वहाँ अखण्ड आनंद की परिव्याप्ति है, जो भी प्राणी वहाँ पहुँच जाता है वह शिवमय हो जाता है। कामायनी में इन स्थलों की विशेषता इस प्रकार वर्णित की गई है–

"शापित न कोई यहाँ है, तापित पापी न यहाँ है।
जीवन वसुधा समतल है, समरस है जो कि यहाँ है।।"[6]

इस प्रकार हिमगिरि कामायनी में अबाधित मुक्ति का प्रतीक है। यहाँ का परम धन संतोष है। मनु को हिंसा धर्म में प्रवृत्त कराने के कारण 'पशु–यक्ष' में पाप का प्रतीकरण है।

बुद्धि की मलीनता से ग्रस्त होने के कारण उसमें काम, और वासना का जन्म होता है। काम 'इष्ट विषय की अभिलाषा' है और वासना 'इष्ट विषय में अभिनेवेश'। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप नारी में स्वच्छन्द–क्रिया–संकोच होता है। मन वासना से अतृप्त होकर कर्म की ओर प्रेरित होता है। उसकी अधिकाधिक तृष्णा उसे हिंसा की ओर ले जाती है। इस कर्म के मार्ग में आने वाले तत्वों से उसे ईर्ष्या होती है। इसी अहं की अतृप्ति मन को बृद्धि की ओर आकर्षित करती है।

सर्गों का सांकेतिक नामकरण

कामायनी का रूपक–तत्व एक अन्य दृष्टि से भी स्पष्ट है। इसके सर्गों का नामकरण उसी प्रकार रखा गया है, जिस प्रकार हमारे मन में वृत्तियाँ उठती हैं। यहाँ आधुनिक मनोविज्ञान की चर्चा से पूर्व मन के विषय में भारतीय शास्त्रों के मत उद्धृत करना असंगत न होगा। छांदोग्य उपनिषद में मन को अन्नमय, प्राण को जलमय और वाक् को तेजोमय कहा गया है। इसी प्रसंग में मन की चंचलता पर भी प्रकाश डाला गया है जिस पर प्रतिबंध लगाना आवश्यक होता है। आधुनिक मनोविज्ञान मन के गूढ़ रहस्यों का विश्लेषण करता है। बालक में सर्वप्रथम शुद्ध चेतना का उदय होता है। बालकों में सर्वप्रथम कुतूहल, जिज्ञासा, भय आदि स्वयंभू मनोवृत्तियों का उदय होता है। किशोरावस्था में इन्हीं स्वयंभू मनोवृत्तियों के सहारे अहं का बोध होता है जो आगे चलकर लिंग चेतना को जन्म देता है।

कामायनी का आरम्भ चिंता से हुआ है। मनु चिंताग्रस्त होकर हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर बैठे हैं। धीरे–धीरे उनमें आशा का संचार होता है और तदन्तर श्रद्धावृत्ति का संसर्ग प्राप्त होता है। उनका मन काम और वासना में उलझने लगता है और इस प्रकार कर्म और ईर्ष्या व संघर्ष करते हुए वे अंत में आनंद को प्राप्त करते हैं। स्पष्ट है कि हमारे मन में उठने वाला भाव कर्म भी इसी के अनुरूप चलता है। इस प्रकार प्रसाद जी ने यहाँ भी दो कथाओं का सफल निर्वाह किया है। निष्कर्षतः प्रसाद ने मानव वृत्तियों का निरूपण करने वाले अपने काव्य में दार्शनिकता का आभास अवश्य दिया है, पर वह दार्शनिकता काव्य का अंग बनकर आई है। उसकी प्रकृति भावना भूमि पर ही अधिष्ठित है। वह काव्य के वस्तु वर्णन और भावात्मक स्वरूप को किसी प्रकार ठेस नहीं पहुंचाती है।[7]

वस्तुतः रूपक–तत्व के सफल निर्वाह की दृष्टि से कामायनी अप्रतिम रचना है। इसके प्रत्येक पात्र तथा घटना का ऐतिहासिक महत्व तो है ही, साथ ही मनोविज्ञान–सम्बन्धी सांकेतिक अर्थ भी अत्यन्त व्यापक है। यह भी ज्ञातव्य है कि रूपक का निर्वाह और वह भी अनेक पात्रों और घटनाओं के संदर्भ में, सरल कार्य नहीं है। स्वयं प्रसाद जी ने कामायनी को रूपक काव्य न मानकर इसमें रूपक की संभावनाओं का संकेत मात्र किया है। वे स्वीकार करते हैं – ''श्रद्धा और मनु का आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्‌भुत मिश्रण हो गया है। इसलिए मनु श्रद्धा और इड़ा अपना ऐतिहासिक महत्व रखते हुए सांकेतिक अर्थ को भी अभिव्यक्त करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।[8]

अतः कामायनी में एकाध प्रसंग में रूपकत्व के शिथिल नियोजन को काव्य कौशल की असमर्थता नहीं मानना चाहिए। इस महाकाव्य में अधिक विस्तार न होते हुए भी अपनी लघु सीमा में ही मानवता के समग्र रूप तथा उसकी समस्याओं एवं उसके समाधानों को एक उत्कृष्ट एवं भव्य साहित्यिक शैली में चित्रित करने का जो प्रयत्न हुआ है, वह सर्वथा सराहनीय है। कामायनी अप्रस्तुत के विरूद्ध प्रस्तुत की, परोक्ष के विरूद्ध प्रत्यक्ष की ओर आदर्श के विरूद्ध यथार्थ की सामयिक शक्ति है। कामायनी का रूपक तत्व भी अपनी शक्तियों के बावजूद इसका अपवाद कैसे रह सकता है। इस महाकाव्य में अधिक विस्तार न होते हुए भी अपनी लघु सीमा में ही मानवता के समग्र रूप, उसकी समस्याओं एवं उसके समाधानों को एक उत्कृष्ट एवं भव्य रूपक शैली में चित्रित करने का जो प्रयास हुआ है, वह सर्वथा सराहनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नंद दुलारे वाजपेयी : हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं.138.
2. गंगा प्रसाद पाण्डेय, महादेवी वर्मा : कामायनी एक परिचय, भूमिका से, पृ.सं.8.
3. जयशंकर प्रसाद : कामायनी, आशा सर्ग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं.25.
4. जयशंकर प्रसाद : कामायनी, श्रद्धासर्ग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं.46.
5. जयशंकर प्रसाद : कामायनी, रहस्य सर्ग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं.28.
6. जयशंकर प्रसाद : कामायनी, आनंद सर्ग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं.306.
7. जयशंकर प्रसाद : कामायनी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, भूमिका से।
8. वही।

❖◆❖